International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 11-01-2026, Accepted: 10-02-2026, Published: 25-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 244-246

# मेरठ शहर के मूकबधिर विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृति का उनके परिवेश तथा लिंगभेद के संदर्भ में अध्ययन

**डॉ0 पारुल मलिक[1], सपना[2]**

[1] असिसटेंट प्रोफेसर एवं सुपरवाइजर, शिक्षा शास्त्र विभाग, शहीद मंगल पांडे गर्ल्स पी जी कॉलेज, चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा शास्त्र विभाग, शहीद मंगल पांडे गर्ल्स पी जी कॉलेज, चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

**सारांश**

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य मूकबधिर विद्यार्थियों का उनके परिवेश तथा लिंगभेद के संदर्भ में अध्ययन करना हैं। इस शोध में मुकबधिर विद्यालयों से प्रदत्तों का संकलन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया। यादृच्छिक विधि द्वारा प्राप्त प्रदत्तों की गणना एवं विवेचना के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–अनुपात की सहायता ली गई। जिज्ञासा प्रवृति के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा शहरी विद्यार्थियों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति अधिक पायी गयी हैं तथा छात्र व छात्राओं की जिज्ञासा की प्रवृत्ति में कोई अंतर नहीं पाया गया।

**मुलशब्दः** मुकबधिर, परिवेश, लिंगभेद, ग्रामीण, जिज्ञासा

## प्रस्तावना

जन्म के समय एक शिशु असहाय तथा असामाजिक प्राणी होता हैं। नवजात शिशु न बोलना जानता हैं, न चलना–फिरना, और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मुल्यों को प्राप्त करने की जिज्ञासा पायी जाती हैं। समाज में रहकर शिक्षा का प्रभाव जैसे–जैसे उस पर पड़ता हैं वैसे–वैसे वह सामाजिक, शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक रूप से विकसित होता रहता हैं। इस प्रकार यह देखा जा सकता हैं कि शिक्षा हमारे लिए कितनी आवश्यक हैं, शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को समाज में उचित स्थान एवं सम्मान मिलता हैं। शिक्षा ही व्यक्ति की समस्याओं को सुलझाती हैं एवं जीवन को सुसंस्कृत बनाती हैं। समाज में एक ऐसा वर्ग भी पाया जाता हैं, जो अपनी विशेष स्थिति के कारण उपेक्षा का पात्र बना हुआ हैं। यह वर्ग हैं–विषिष्ट बालकों का वर्ग। विषिष्ट बालकों की शिक्षा व्यवस्था सुचारू रूप से नहीं चला पाने का दबाव भारतीय मनीषियों पर आज भी बना हुआ हैं। इसके मुख्य कारण हैं – प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी, अभिभावकों द्वारा इन बच्चों की उपेक्षा, विशिष्ट बालकों का सामान्य विद्यालयों में समायोजित न हो पाना आदि। सामान्य विद्यालयों में समायोजित न हो पाने की स्थिति में ही विषिष्ट बालकों के लिए विषिष्ट शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की गईं। इन संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य विषिष्ट बालकों को शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक प्रशिक्षण भी प्रदान करना हैं। जिससे वे आजीविका कमाने की योग्यता ग्रहण कर, आत्मनिर्भरता व स्वावलंबन से जीवन व्यतीत कर सकें। इस वर्ग के बालकों में मूक बधिरता एक चुनौती हैं। मूकबधिर बालक ऐसे बालक हैं जो न तो बोल सकते हैं और न ही सुन सकते हैं। ऐसे बालक को विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती हैं, जिससे इन्हें स्वयं का कार्य करने समझने में सहायता मिलती हैं।

## शोध उद्देश्य

1. मूक बधिर छात्र व छात्राओं की जिज्ञासा की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. मूक बधिर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

## शोध परिकल्पना

1. मूकबधिर छात्र व छात्राओं की जिज्ञासा की प्रवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं।
2. मूकबधिर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं।

## संक्रियात्मक शब्दों का परिभाषीकरण

### मूकबधिर

प्रस्तुत अध्ययन में मूक बधिर से आशय ऐसे बच्चों से हैं जो श्रवण शक्ति और वाणी शक्ति खो चुके हैं और सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं। मूक बधिरता शारीरिक विकलांगता की श्रेणी में आती हैं। मूक तथा बधिरता दो भिन्न शारीरिक दोष हैं। अनेक अध्ययन में स्पष्ट हो चुका हैं कि जो बालक पूर्णतः सुन नहीं सकते ,वे बोल भी नहीं पाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट हैं कि श्रवण में असमर्थ होने के कारण वाक् में असमर्थ व्यक्ति को मूक बधिर कहा जाता हैं।

### जिज्ञासा

जिज्ञासा का शाब्दिक अर्थ हैं ज्ञान प्राप्ति हैंतु उत्सुकता का होना। मनुष्य प्रारंभ से ही जिज्ञासु रहा हैं। वह क्या, क्यों, कब, कैसे खोजने में लगा रहा हैं जिज्ञासा मनुष्य ही वह प्रवृत्ति हैं जो कि उसके ज्ञान में वृद्धि करती हैं जिसके कारण उसने आदिम समाज से वर्तमान तक प्रगति की हैं। जिज्ञासा प्रत्येक व्यक्ति में पाई जाती हैं मनुष्य यदि कोई भी खोज, निरीक्षण या अवलोकन का कार्य करना चाहता हैं तो उसके लिए उसका जिज्ञासा पूर्ण व्यवहार ही कार्यकुशलता प्रदान करता हैं। फेसटिनजर के अनुसार, जिज्ञासा वास्तविकता की जांच के लिए अत्यधिक सहायक सिद्ध होती हैं।

## संबंधित साहित्य

रटर (1970), शैफार्ड (1979), सेठ (1989) तथा अरूणा एवं रेड्डी (2000) ने मूक बधिर बालकों की भावात्मक एवं व्यवहार संबंधी समस्याओं को विशेष रूप से समझने के लिए अध्ययन किए, जिसमें मूक–बधिर बालकों में समस्यात्मक व्यवहार का प्रतिशत अधिक पाया गया तथा मूक–बधिर बालकों एवं सामान्य बालकों के व्यक्तित्व की विभिन्न विशेषताओं में भी सार्थक अंतर पाया गया।

फ्रेंक (1996) एवं गैरल (2001) के 'मूक–बधिर बालकों एवं सामान्य बालकों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन' में मूक–बधिर बालक सामान्य बालकों की तुलना में अधिक निराशावादी पाए

गए। उनमें हीन भावना एवं भय की भावना की अधिकता तथा स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास की कमी पाई गई।

शर्मा, सरिता 2007 ने ''उच्च प्राथमिक स्तर के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों की संवेगात्मक स्थिरता, सृजनात्मकता, नैतिक मूल्य तथा जिज्ञासा का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया । न्यादर्श के रूप में 800 अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी छात्र–छात्राओं को लिया गया तथा निष्कर्ष स्थापित किया कि अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्रों की जिज्ञासा में सार्थक अन्तर पाया गया। अन्तर्मुखी छात्राओं की अपेक्षा बहिर्मुखी छात्र अधिक जिज्ञासु होते हैं। अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी छात्राओं की जिज्ञासा में सार्थक अन्तर पाया गया। अन्तर्मुखी छात्राओं की अपेक्षा बहिर्मुखी छात्राएँ अधिक जिज्ञासु होती हैं। अन्तर्मुखी छात्राओं की अपेक्षा अन्तर्मुखी छात्र अधिक जिज्ञासु होते हैं। बहिर्मुखी छात्राओं की अपेक्षा बहिर्मुखी छात्र कम जिज्ञासु होते हैं। अन्तर्मुखी विद्यार्थियों की जिज्ञासा एवं संवेगात्मक स्थिरता के मध्य निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया। बहिर्मुखी विद्यार्थियों की जिज्ञासा व नैतिकता में निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

कुमार राजीव ने 1989 में ''माध्यमिक स्तर के बालकों व बालिकाओं की जिज्ञासा तथा बुद्धिमत्ता तथा स्कूली उपलब्धियों का अध्ययन'' शीर्षक पर शोध कार्य किया। उक्त अध्ययन 1024 माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों पर किया गया और निष्कर्ष के रूप में पाया कि जिज्ञासा तथा विद्यालयी उपलब्धि के मध्य महत्वपूर्ण धनात्मक सहसंबंध पाये गये। जिज्ञासा तथा विद्यालयी उपलब्धियों में संबंध शहरी व ग्रामीण पृष्ठ भूमि के बालकों में समान रूप से लागू हुआ दोनों में अन्तर नहीं था।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

## जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में मेरठ में स्थित मूक–बधिर विद्यालयों में अध्ययरत कक्षा–9 से 12 कक्षा के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया हैं।

## न्यादर्श

शोधार्थी ने अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार मेरठ में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के कुल 80 विद्यार्थियों का चयन किया। इसके अन्तर्गत विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया।

## प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यानुसार प्रदत्त प्राप्ति का स्रोत मेरठ जिला में स्थित मूक–बधिर विद्यालयों में अध्ययरत कक्षा–9 से 12 कक्षा के विद्यार्थी हैं अतः अध्ययन का स्रोत प्राथमिक हैं।

## प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक हैं।

## अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

जिज्ञासा से सम्बन्धित प्रश्नावली – स्वनिर्मित ।

## सांख्यिकीय

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकीय विष्लेषण हैंतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य का प्रयोग किया गया हैं।

## विश्लेषण एवं विवेचना

## शोध परिणाम

परिकल्पना–1

1. मूक बधिर छात्र व छात्राओं की जिज्ञासा की प्रवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं।

**तालिका 1:** मूक बधिर छात्र व छात्राओं की जिज्ञासा की प्रवृत्ति

| क0सं0 | विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र | 40 | 177.50 | 16.30 | 1.76 |
| 2 | छात्रा | 40 | 184.57 | 19.40 | |

Df =78 एवं 0.05 तथा 0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान क्रमशः 1.99 तथा 2.64 हैं। उपर्युक्त तालिका संख्या–1 में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की जिज्ञासा की प्रवृत्ति से सम्बंधी आँकडों को प्रदर्षित किया गया हैं। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों का मध्यमान 177.50 एवं मानक विचलन 16.30 हैं। वहीं छात्राओं का मध्यमान 184.57 एवं मानक विचलन 19.42 हैं। Df =78 के लिए टी–मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.99 तथा टी–मूल्य 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.64 हैं जबकि अवकलित टी–मूल्य 1.76 हैं अर्थात अवकलित टी–मूल्य सारणी–मूल्य से कम हैं। अतः परिकल्पना' मूक बधिर छात्र व छात्राओं की जिज्ञासा की प्रवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं। स्वीकृत होती हैं। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता हैं कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के जिज्ञासा में अन्तर नही पाया जाता हैं।

## परिकल्पना – 2

2. मूक बधिर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं।

**तालिका 2:** मूक बधिर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति

| क0सं0 | विद्यार्थी | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ग्रामीण | 40 | 171.37 | 28.05 | 2.78 |
| 2 | शहरी | 40 | 186.87 | 21.18 | |

Df =78 एवं 0.05 तथा 0.01 विश्वास के स्तर पर सार्थकता के लिये आवश्यक मान क्रमशः 1.99 तथा 2.64 हैं। उपर्युक्त तालिका संख्या–2 में मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति से सम्बंधी आँकडों को प्रदर्शित किया गया हैं। मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 171.37 एवं मानक विचलन 28.05 हैं। वहीं शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 186.87 एवं मानक विचलन 21.18 हैं। Df=78 के लिए टी–मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.99 तथा टी–मूल्य 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.64 हैं जबकि अवकलित टी–मूल्य 2.78 हैं अर्थात अवकलित टी–मूल्य सारणी–मूल्य से अधिक हैं। अतः परिकल्पना' मूक बधिर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर नहीं हैं। अस्वीकृत होती हैं। परिणामस्वरूप सामान्यीकरण स्थापित होता हैं कि मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता हैं। शहरी विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति, ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी हैं।

## शैक्षिक निहितार्थ

## शिक्षकों के लिए सुझाव

प्रस्तुत शोध शिक्षकों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति को बढ़ाने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। शिक्षकों का दायित्व हैं कि वे शिक्षण के समय विषय से संबंधित नवीन जानकारी विद्यार्थियों को प्रदान करें, जिससे विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति को बढ़ाया जा सकेगा। विद्यालय में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

## विद्यालय प्रबंधकों के लिए सुझाव

यह शोध विद्यालय प्रबंधकों की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत शोध से विद्यालय प्रबंधन को अपने विद्यालय में अध्यनरत मूक बधिर बालको को समझने में मदद मिलेगी। विद्यार्थियों की जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए विद्यालय में पत्र–पत्रिकाऐं, अखबार आदि तथा अनेक शैक्षिक कार्यक्रमों को विद्यालय में आयोजित करते रहना चाहिए। विद्यार्थियों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति को बढ़ाने में यें सभी सहायक होंगे।

## अभिभावकों के लिए सुझाव

अभिभावकों की बालकों की जिज्ञासा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। यह शोध अध्ययन उनके बालकों की जिज्ञासा की प्रवृत्ति को बढ़ाने में अति महत्वपूर्ण हैं। अभिभावकों को अपने बालकों को नवीन जानकारी प्रदान करनी चाहिए। उन्हैं नवीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अखबार तथा मैगजीन आदि उपलब्ध करानी चाहिए एवं उनके प्रश्नों के उत्तर खोजने में उनकी सहायता करनी चाहिए।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. गैरेट, हैंनरी ई., (1986), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोगए लुधियाना, कल्याणी पब्लिशर्स.
2. दास, एन. (2003), इन्टीग्रेटेड एज्यूकेषन फॉर चिल्ड्रन विद स्पेषियल नीड, नई दिल्लीः डोमीनेन्ट पब्लिषर्स।
3. गुप्ता, एस. पी. (2005), सांख्यिकीय विधियॉ, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
4. अग्रवाल, जे. सी. (2009), षिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः षिप्रा पब्लिकेषन्स
5. मंगल, एस. के. (2016), एज्यूकेटिंग एक्सेप्षनल चिल्ड्रन, एन इन्ट्रोडक्षन टू स्पेषल एज्यूकेषन, नई दिल्लीः पी.एच.आई. लर्निंग प्रा. लि.।
6. सिरोला. मीना, शर्मा.अन्नपूर्णा., (2018), राजस्थान में स्थित मूक बधिर विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन का अध्ययनत्र
7. तिड़के डी. एम., (2022), मूक–बधिर विद्यार्थियों में शैक्षणिक अभिरूची व शैक्षणिक उपलब्धि का सहसंबंधात्मक अध्ययन